Year-8; Sept. 2017
ISSN–2231-1130
UGC Sr. No. – 48398
VEETHIKA

उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

जितेन्द्र सिंह गोयल*

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में 200 (100 सामान्य तथा 100 अनुसूचित जाति) के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है। विद्यार्थियों के समायोजन को ज्ञात करने हेतु ए0 के0 पी0 सिन्हा तथा आर0 पी0 सिंह द्वारा निर्मित समायोजन मापनी का प्रयोग किया गया है तथा प्राप्तांकों का विश्लेषण क्रान्तिक अनुपात की मदद से किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की तुलना में सामान्य जाति के विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन, संवेगात्मक समायोजन, शैक्षिक समायोजन एवं कुल समायोजन अच्छा होता है।

संकेत शब्द :– सामान्य जाति, अनुसूचित जाति एवं समायोजन ।

प्रस्तावना :–

समायोजन की अवधारणा मूल रूप से **डार्विन (1859)** के जैविक विकास का सिद्धांत से ली गयी है। समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक ही समय में अपने पर्यावरण के साथ सद्भाव बनाए रखते हुए अपने संसाधनों का उपयोग करता है व्यक्ति को सफल जीवन व्यतीत करने के लिये अपने वातावरण और परिस्थितियों के साथ समायोजन स्थापित करना आवश्यक होता है एक सामाजिक प्राणी होने के कारण मनुष्य प्रत्येक क्षेत्र में अपना समायोजन करने का प्रयास करता है। जन्म के समय बच्चा पूर्ण रूप से असमाजिक होता है। परन्तु शारीरिक तथा मानसिक विकास के साथ–साथ वह सामाजिक विकास हेतु समायोजन करना भी सीखता है। समायोजन एक सतत चलने वाली प्रक्रिया है। व्यक्ति की इच्छाओं, विचारों प्रेरणाओं लक्ष्य में जितना समन्वय होता है। किसी व्यक्ति का समायोजन भी उतना ही अच्छा होता है। इस प्रकार सफल समायोजित व्यक्ति जीवन में सुख एवं शान्ति का अनुभव करता है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य भी मनुष्य को समाज में पूर्णतः समायोजित करना है। समायोजन को अनुकूलन या सामंजस्य भी कहते है। समायोजन का अर्थ है भली भाँति या अच्छी तरह व्यवस्था करना। अतएव 'समायोजन' का अर्थ हुआ सुव्यवस्थित या अच्छे ढंग से परिस्थितियों का अनुकूल बनाने की प्रक्रिया जिसमें कि व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाये और मानसिक द्वन्द्व भी स्थापित न होने पाये। व्यक्ति को अपने लक्ष्य की प्राप्ति जब सरलता से नही हो पाती है तो उसे असन्तोष उत्पन्न होता है। परन्तु जब व्यक्ति को अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता है तो वह कुण्ठा, असन्तोष, हताशा, निराशा या भंग्नाशा से ग्रसित हो जाती है।

बोरिंग लैंगफिल्ड (1962) के अनुसार ''समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्राणी अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में संतुलन रखता है।''

विद्यार्थियों का जीवन काल ही ऐसा होता है जिसमें उन्हें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। विद्यार्थियों स्वतन्त्रता चाहते है परन्तु परिवार और समाज में उन्हें वांछित स्वतन्त्रता नहीं मिलती जिसके फलस्वरूप वे खिन्न हो जाते है। विद्यार्थियों को प्रायः अपने पर्यावरण के साथ समायोजन स्थापित करने में असमर्थता होती है उनमें अनेकों समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं, जिसके फलस्वरूप वे शीघ्र ही मानसिक सन्तुलन खो देते हैं। उनमें स्वतन्त्र रूप से निर्णय करने की योग्यता होती है परन्तु इसके लिए उन्हें परिवार वाले अवसर नहीं देते। इससे उनको बाद के जीवन में निर्णय लेने में कठिनाईयां होती है। विद्यार्थियों का यह

* शोध छात्र, शिक्षा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ (उ0प्र0)

जीवन सबसे कठिन काल है। इसमें विद्यार्थियों को प्रतिबल, खिंचाव, तनाव, तूफान, संघर्ष, दबाव, निराशाओं का सामना करना पड़ता है। तीव्र शारीरिक परिवर्तनों के कारण उनके मानसिक जीवन में भयंकर उथल–पुथल होती है। यौन विकास के साथ–साथ काम प्रेरणाएं उनके व्यवहार को विलक्षण बना देती है। काम प्रेरणाओं के संचार के साथ मानसिक तनाव, चिन्ताएँ व संघर्ष भी बढ़ता है। उन्हें तनाव दबाव सहने पड़ते है और विद्यार्थियों को घर, परिवार व समाज में समायोजन की समस्याओं का सामना करना पड़ता है

समायोजन से सम्बन्धित शोध साहित्य :–

अल्लाही (2014) ने ए स्टडी ऑफ एडजस्टमेंट ऑन एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ हाई स्कूल स्टूडेण्ट्स का अध्ययन किया, और निष्कर्ष रूप से पाया कि– सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। छात्र और छात्राओं के समायोजन के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। **इंगले, विनायक एम. (2011)** ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक आर्थिक स्थिति, आवासीय पृष्ठभूमि एवं समायोजन के प्रभाव का अध्ययन किया प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष थे– उच्च सामाजिक समायोजन वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, निम्न सामाजिक समायोजन के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना में सार्थक रूप से उच्च पायी गयी। **गुप्ता एम. और गुप्ता, आर. (2011)** ने एडजस्टमेंट एण्ड स्कूलोस्टिक अचीवमेंट ऑफ बॉयज एण्ड गर्ल्स का अध्ययन किया और निष्कर्ष रूप से पाया कि– छात्र और छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन में अन्तर नहीं है। छात्र और छात्राओं के शैक्षिक समायोजन में अन्तर नहीं है। छात्रों की अपेक्षा छात्राओं के सामाजिक समायोजन का स्तर उच्च है। ग्रामीण की अपेक्षा शहरी विद्यार्थियों का संवेगात्मक समायोजन उच्च है। ग्रामीण की अपेक्षा शहरी विद्यार्थियों का शैक्षिक समायोजन उच्च है। ग्रामीण की अपेक्षा शहरी विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन कम है। **कौर, एस. (2012)** ने ''ए स्टडी ऑफ एडजस्टमेंट ऑफ हाई स्कूल स्टॅडेण्ट्स इन रिलेशन टू देअर अचीवमेंट, सेक्स एण्ड लोकल्टी'' शोध किया और निष्कर्ष रूप से पाया कि– ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के समायोजन स्तर में अन्तर नहीं है। छात्र और छात्राओं के समायोजन स्तर में अन्तर नहीं है। सरकारी और निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है। **कुमार,ए. एवं गौतम, पी. (2016)** ने स्नातक स्तर के छात्रावासीय एवं गैर छात्रावासीय विद्यार्थियों के समायोजन का एक तुलनात्मक अध्ययन का अध्ययन किया प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष थे– अर्थात् छात्रावासीय एवं गैर छात्रावासीय विद्यार्थी का समायोजन एक समान है। **मक्कड़, एन. (2010)** ने ए स्टडी ऑफ एज्यूकेशनल एस्पाइरेशन एण्ड स्कूल एडजस्टमेंट ऑफ स्टूडेण्ट्स इन रिलेशन टू आर्गेनाइजेशनल क्लाइमेंट का अध्ययन किया और निष्कर्ष रूप से पाया कि– निजी की अपेक्षा सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का स्तर उच्च है। निजी की अपेक्षा सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन का स्तर उच्च है निजी की अपेक्षा सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन का स्तर उच्च है। **सिंह, वी. (2015)** ने स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन एवं संवेगात्मक बुद्धि के मध्य सहसंबंध का अध्ययन किया और निष्कर्ष रूप से पाया कि कि स्नातक स्तर के सर्वाधिक 30 प्रतिशत विद्यार्थियों ने संतोषजनक समायोजन श्रेणी प्राप्त की तथा सबसे कम 13 प्रतिशत विद्यार्थी ऐसे रहे जिनकी समायोजन क्षमता उत्कृष्ट श्रेणी की पायी गयी। **रानी, आर. (2017)** ने अम्बाला मण्डल के सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के समस्याओं का उनके समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया और निष्कर्ष रूप से पाया कि सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की समस्याओं से उच्च ग्रसित विद्यार्थियों में शैक्षिक समायोजन में निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा में अधिक सक्षम है, सरकारी विद्यालयों की समस्याओं से सामान्य ग्रसित विद्यार्थियों में समायोजन के सभी पक्षों में निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा में अधिक सक्षम है, कि

सरकारी विद्यालयों की समस्याओं से निम्न ग्रसित विद्यार्थियों में समायोजन के सभी पक्षों में निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा में अधिक सक्षम है।

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के कुल समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनायें :–

उद्देश्यों के आधार पर निम्नलिखित परिकल्पनायें बनायी जाती हैं।

1. उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के कुल समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिसीमांकन :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन केवल उत्तर प्रदेश के लखनऊ शहर के उच्च माध्यमिक स्तर के (12 वीं कक्षा के) विद्यार्थियों तक सीमित है।

शोध विधि :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

समष्टि :–

इस अध्ययन हेतु लखनऊ शहर के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के सामान्य जाति के एवं अनुसूचित जाति के छात्र एवं छात्राओं को समष्टि के रुप में लिया गया है।

प्रतिदर्श एवं प्रतिदर्श चयन विधि :–

प्रतिदर्श के अन्तर्गत लखनऊ जनपद के कक्षा 12 के विद्यालयों से यादृच्छीकृत न्यादर्शन विधि द्वारा उत्तर प्रदेश बोर्ड के 10 विद्यालयों को सम्मिलित किया है

तत्पश्चात् स्तरीकृत यादृच्छीकृत विधि द्वारा 200 विद्यार्थियों का चयन गया है। इसमें 100 सामान्य तथा 100 अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

चयनित न्यादर्श (N=200)

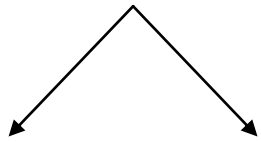

100 सामान्य जाति के विद्यार्थी | **100 अनुसूचित जाति के विद्यार्थी**

शोध उपकरण –

प्रस्तुत अध्ययन में समायोजन ज्ञात करने हेतु शोधकर्ता द्वारा ए0 के0 पी0 सिन्हा तथा आर0 पी0 सिंह द्वारा निर्मित समायोजन मापनी मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधियॉ :–

उपकरण से प्राप्त प्राप्तांकों को विभिन्न तालिकाओं में व्यवस्थित कर उनका विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात की गणना कर किया गया है तथा दण्डआरेख के द्वारा आँकड़ों को प्रदर्शित किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं परिणामों की व्याख्या

उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

उपरोक्त परिकल्पना का अध्ययन क्रान्तिक अनुपात परीक्षण द्वारा किया गया है जिसके परिणाम तालिका–01 में दर्शाये गयें हैं।

तालिका संख्या – 01

उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

वर्ग	N	मध्य मान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात मान	.05 सार्थकता स्तर, df=198 पर निष्कर्ष
सामान्य जाति विद्यार्थी	100	7.33	2.73	5.200*	सार्थक अन्तर है
अनुसूचित जाति विद्यार्थी	100	5.57	2.00		

df = 198 पर t का अपेक्षित मूल्य (t. तालिका से) * त्रुटि के 0.05 स्तर पर = 1.97

दण्डआरेख संख्या – 01

उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विधार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन के प्राप्तांकों के मध्यमानों का दण्डआरेख

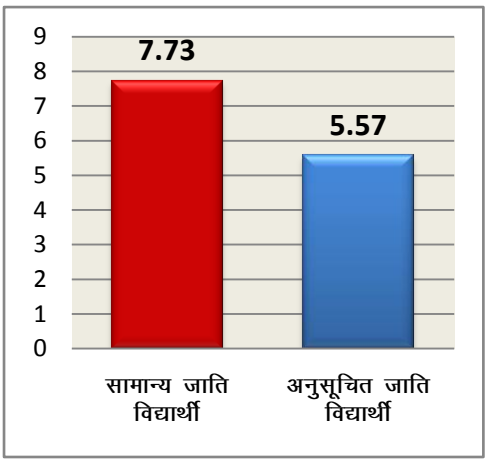

प्रदत्तों का विश्लेषण :–

तालिका संख्या – 01 में उपकरण पर प्राप्त 100 सामान्य जाति के विद्यार्थियों के एवं 100 अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के प्रदत्तों का मध्यमान क्रमशः 7.33 व 5.57 है, मानक विचलन क्रमशः 2.73 व 2.00 तथा क्रान्तिक अनुपात का मान 5.200 है। यह प्राप्त मान 0.05 सार्थकता के स्तर पर असार्थक है। df = 198 पर t अनुपात का सारणी मूल्य त्रुटि के 0.05 स्तर पर क्रमशः 1.97 है। स्पष्ट है कि क्रान्तिक अनुपात का प्राप्त मूल्य सारणी मूल्य से अधिक हैं इसलिए अंतर सार्थक है एवं शून्य परिकल्पना संख्या–01, उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकृत की जाती हैं इस आधार पर कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में अन्तर पाया जाता है।

परिणाम की व्याख्या :–

प्रतिपादित परिकल्पना–01 को अस्वीकृत किया जाता है। यह परिणाम इंगित करता है कि कि उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर है। अर्थात उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में अन्तर पाया जाता है।

उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

उपरोक्त परिकल्पना का अध्ययन क्रान्तिक अनुपात परीक्षण द्वारा किया गया है जिसके परिणाम तालिका–02 में दर्शाये गयें हैं।

तालिका संख्या – 02

उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

वर्ग	N	मध्य मान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात मान	.05 सार्थकता स्तर, df=198 पर निष्कर्ष
सामान्य जाति विद्यार्थी	100	8.07	2.62	3.263*	सार्थक अन्तर है
अनुसूचित जाति विद्यार्थी	100	6.84	2.71		

df = 198 पर t का अपेक्षित मूल्य (t.तालिका से) * त्रुटि के 0.05 स्तर पर = 1.97

दण्डआरेख संख्या – 02

उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन के प्राप्तांकों के मध्यमानों का दण्डआरेख

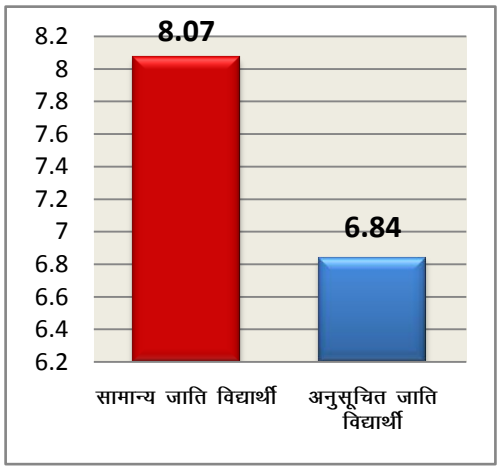

प्रदत्तों का विश्लेषण :–

तालिका संख्या – 02 में उपकरण पर प्राप्त 100 सामान्य जाति के विद्यार्थियों के एवं 100 अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के प्रदत्तों का मध्यमान क्रमशः 8.07 व 6.84 है, मानक विचलन क्रमशः 2.62 व 2.71 तथा क्रान्तिक अनुपात का मान 3.263 है। df = 198 पर t अनुपात का सारणी मूल्य त्रुटि के 0.05 स्तर पर क्रमशः 1.97 है स्पष्ट है कि क्रान्तिक अनुपात का प्राप्त मूल्य सारणी मूल्य से अधिक हैं इसलिए अंतर सार्थक है एवं शून्य परिकल्पना संख्या–02, उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकृत की जाती हैं इस आधार पर कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन में अन्तर पाया जाता है।

परिणाम की व्याख्या :–

प्रतिपादित परिकल्पना–02 को अस्वीकृत किया जाता है। यह परिणाम इंगित करता है कि कि उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन में सार्थक अंतर है। अर्थात उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन में अन्तर पाया जाता है।

उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

उपरोक्त परिकल्पना का अध्ययन क्रान्तिक अनुपात परीक्षण द्वारा किया गया है जिसके परिणाम तालिका–03 में दर्शाये गयें हैं।

तालिका संख्या – 03

उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विधार्थियों के शैक्षिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

वर्ग	N	मध्य मान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात मान	ण्05 सार्थकता स्तर, कत्रि198 पर निष्कर्ष
सामान्य जाति विद्यार्थी	100	6.94	2.63	3.39*	सार्थक अन्तर है
अनुसूचित जाति विद्यार्थी	100	5.60	2.95		

df = 198 पर t का अपेक्षित मूल्य (t.तालिका से) * त्रुटि के 0.05 स्तर पर = 1.97

दण्डआरेख संख्या – 03

उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन के प्राप्तांकों के मध्यमानों का दण्डआरेख

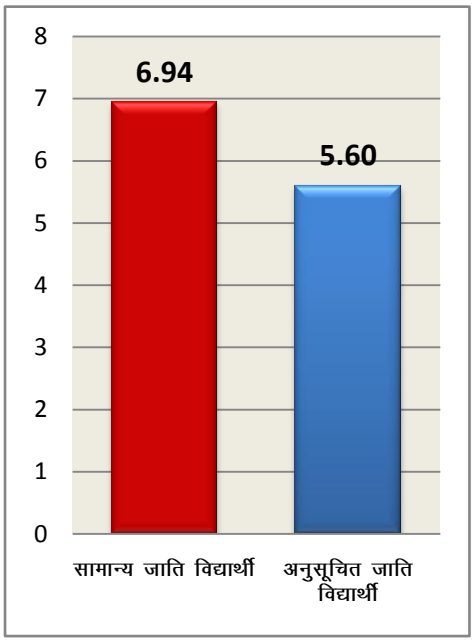

प्रदत्तों का विश्लेषण :–

तालिका संख्या–03 में उपकरण पर प्राप्त 100 सामान्य जाति के विद्यार्थियों के एवं 100 अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के प्रदत्तों का मध्यमान क्रमशः 6.94 व 5.60 है, मानक विचलन क्रमशः 2.63 व 2.95 तथा क्रान्तिक अनुपात का मान 3.39 है। df = 198 पर t अनुपात का सारणी मूल्य त्रुटि के 0.05 स्तर पर क्रमशः 1.97 है स्पष्ट है कि क्रान्तिक अनुपात का प्राप्त मूल्य सारणी मूल्य से अधिक हैं इसलिए अंतर सार्थक है एवं शून्य परिकल्पना संख्या–03, उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकृत की जाती हैं इस आधार पर कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में अन्तर पाया जाता है।

परिणाम की व्याख्या :–

प्रतिपादित परिकल्पना– 03 को अस्वीकृत किया जाता है। यह परिणाम इंगित करता है कि कि उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में सार्थक अंतर है। अर्थात उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में अन्तर पाया जाता है।

उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के कुल समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

उपरोक्त परिकल्पना का अध्ययन क्रान्तिक अनुपात परीक्षण द्वारा किया गया है जिसके परिणाम तालिका–04 में दर्शाये गयें हैं।

तालिका संख्या – 04

उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के कुल समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

वर्ग	N	मध्य मान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात मान	ण्05 सार्थकता स्तर, कत्रि98 पर निष्कर्ष
सामान्य जाति विद्यार्थी	100	15.26	5.96	2.10*	सार्थक अन्तर है
अनुसूचित जाति विद्यार्थी	100	13.59	5.21		

df = 198 पर t का अपेक्षित मूल्य (t. तालिका से) * त्रुटि के 0.05 स्तर पर = 1. 97

दण्डआरेख संख्या –04

उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के कुल समायोजन के प्राप्तांकों के मध्यमानों का दण्डआरेख

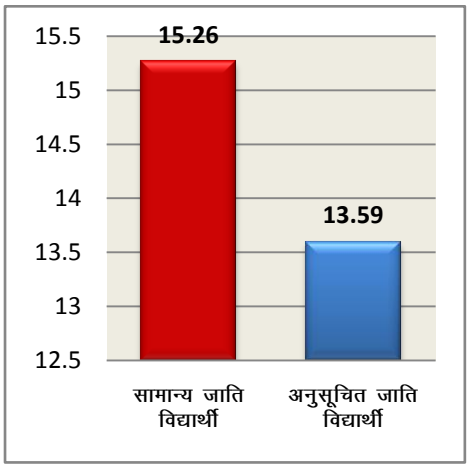

प्रदत्तों का विश्लेषण :–

तालिका संख्या– 04 में उपकरण पर प्राप्त 100 सामान्य जाति के विद्यार्थियों के एवं 100 अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के प्रदत्तों का मध्यमान क्रमशः 15.26 व 13.59 है, मानक विचलन क्रमशः 5.96 व 5.21 तथा क्रान्तिक अनुपात का मान 2.10 है। df = 198 पर t अनुपात का सारणी मूल्य त्रुटि के 0.05 स्तर पर क्रमशः 1.97 है स्पष्ट है कि क्रान्तिक अनुपात का प्राप्त मूल्य सारणी मूल्य से अधिक हैं इसलिए अंतर सार्थक है एवं शून्य परिकल्पना संख्या–04, उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के कुल समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकृत की जाती हैं इस आधार पर कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के कुल समायोजन में अन्तर पाया जाता है।

परिणाम की व्याख्या :–

प्रतिपादित परिकल्पना–04 को अस्वीकृत किया जाता है। यह परिणाम इंगित करता है कि कि उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के कुल समायोजन में सार्थक अंतर है। अर्थात उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के कुल समायोजन में अन्तर पाया जाता है।

निष्कर्ष :–

वर्तमान शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार है–

1. **उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन –**

वर्तमान शोध अध्ययन के संदर्भ में उक्त उद्देश्य इंगित करता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन के मध्यमान में सार्थक अन्तर है, अर्थात उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में अन्तर व्याप्त है।

दण्डआरेख सं0 – 01 के बार डायग्राम का अध्ययन करने पर प्रदर्शित होता है कि सामान्य जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन के प्राप्तांकों का मध्यमान अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन के प्राप्तांकों के मध्यमान से अपेक्षाकृत अधिक है अतः निष्कर्षतः सामान्य जाति के विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन अच्छा होता है।

2. **उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन –**

वर्तमान शोध अध्ययन के संदर्भ में उक्त उद्देश्य इंगित करता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन के मध्यमान में सार्थक अन्तर है, अर्थात उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन में अन्तर व्याप्त है।

दण्डआरेख सं0 – 02 के बार डायग्राम का अध्ययन करने पर प्रदर्शित होता है कि

सामान्य जाति के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन के प्राप्तांकों का मध्यमान अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन के प्राप्तांकों के मध्यमान से अपेक्षाकृत अधिक है अतः निष्कर्षतः सामान्य जाति के विद्यार्थियों का संवेगात्मक समायोजन अच्छा होता है।

3. उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन –

वर्तमान शोध अध्ययन के संदर्भ में उक्त उद्देश्य इंगित करता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन के मध्यमान में सार्थक अन्तर है, अर्थात उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में अन्तर व्याप्त है।

दण्डआरेख सं0 – 03 के बार डायग्राम का अध्ययन करने पर प्रदर्शित होता है कि सामान्य जाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन के प्राप्तांकों का मध्यमान अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन के प्राप्तांकों के मध्यमान से अपेक्षाकृत अधिक है अतः निष्कर्षतः सामान्य जाति के विद्यार्थियों का शैक्षिक समायोजन अच्छा होता है।

4. उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के कुल समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन –

वर्तमान शोध अध्ययन के संदर्भ में उक्त उद्देश्य इंगित करता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के कुल समायोजन के मध्यमान में सार्थक अन्तर है, अर्थात उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के कुल समायोजन में अन्तर व्याप्त है।

दण्डआरेख सं0 – 04 के बार डायग्राम का अध्ययन करने पर प्रदर्शित होता है कि सामान्य जाति के विद्यार्थियों के कुल समायोजन के प्राप्तांकों का मध्यमान अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के कुल समायोजन के प्राप्तांकों के मध्यमान से अपेक्षाकृत अधिक है अतः निष्कर्षतः सामान्य जाति के विद्यार्थियों का कुल समायोजन अच्छा होता है।

शोध अध्ययन का शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध अध्ययन उच्च माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन शीर्षक के अंतर्गत किया गया है प्रस्तुत शोध के परिणाम शिक्षक, अभिभावकों, विद्यार्थियों के लिए उपयोगी हो सकते हैं।

1. विद्यालय में भेदभाव रहित स्वतन्त्र वातावरण का निर्माण करना चाहिये जिससे अनुसूचित जाति के विद्यार्थी स्वयं को हीन न समझें जिससे उनका सर्वांगीण विकास हो सके।
2. शिक्षक को अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करते रहना चाहिये जिससे उनका शैक्षिक स्तर ऊँचा उठ सके।
3. अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के लिए विशेष कक्षाओं का आयोजन किया जाना चाहिये जिससे उनका शैक्षिक स्तर ऊँचा उठ सके।
4. अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के समायोजन को प्रभावित करने वाले कारकों को खोजा जाना चाहिये तथा उनकी समस्याओं का समाधान करना चाहिये के छात्रों के शैक्षिक पिछडेपन को दूर किया जा सके।
5. अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों को विद्यालय में होने वाली पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने के लिये प्रोत्साहित करते रहना चाहिये, जिससे उनका सामाजिक विकास हो सके।

सन्दर्भ सूची –

अल्लाही (2014). ए स्टडी ऑफ एडजस्टमेंट ऑन एकेडमी अचीवमेंट ऑफ हाईस्कूल स्टूडेण्ट्स, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस एण्ड इन्टर डिसिप्लनरी रिसर्च. 1(5) 64–67.

बेस्ट, जे.डब्ल्यू. (2001), 'रिसर्च इन एजूकेशन, नई दिल्ली : प्रिन्टस हॉल ऑफ इन्डिया प्रा.लि.

भटनागर, ए.बी. तथा अनुराग भटनागर. (2011). शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली. मेरठ : आर.लाल बुक डिपो.

गुप्ता, एस0पी0. (2012). अनुसंधान संदर्शिका . इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन्

कौल, एल. (2004). शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली. नई दिल्ली : विकास पब्लिसिंग हाउस प्रा. लि.

कौर, एस. (2012), ए स्टडी ऑफ एडजस्टमेंट ऑफ हाई स्कूल स्टॅडेण्ट्स इन रिलेशन टू देअर अचीवमेंट, सेक्स एण्ड लोकल्टी. इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन एज्यूकेशन मैथडोलॉजी कांसिल फॉर इनोवेटिव रिसर्च, 1(2). 101–105.

मक्कड़, एन. (2010) ए स्टडी ऑफ एज्यूकेशनल एस्पाइरेशन एण्ड स्कूल एडजस्टमेंट ऑफ स्टूडेण्ट्स इन रिलेशन टू आर्गेनाइजेशनल क्लाइमेंट'', पीएच. डी. इन एज्यूकेशन, पंजाब यूनिवर्सिटी।

पाठक, पी0डी0 (2005) भारतीय शिक्षा एवं उसकी समस्याएं, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

पाण्डेय, के.पी. (1991). शैक्षिक अनुसंधान की रूपरेखा. मेरठ : अमिताभ प्रकाशन.

रानी, आर. (2017). अम्बाला मण्डल के सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के समस्याओं का उनके समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ कॉमर्स, आर्ट्स एंड साइंस 8(1).22–29.

शर्मा, आर.ए. (2012). शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया. मेरठ : आर. लाल बुक डिपो.

सिंह, ए. के. (2003).मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ .दिल्ली : मोती लाल बनारसी दास प्रकाशन.

सिंह, जे. (2007). लखनऊ विश्वविद्यालय के स्नातक स्तर के खिलाड़ियों तथा गैर खिलाड़ियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन. अप्रकाशित एम0 ए0 शोध प्रबन्ध, शिक्षा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय.

सिंह, पी. (2012). माध्यमिक स्तर के सह शिक्षण संस्थानों तथा बालिका विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन. अप्रकाशित एम0ए0 शोध प्रबन्ध शिक्षा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय.

कुमार, ए. एवं गौतम. पी. (2016). स्नातक स्तर के छात्रावासीय एवं गैर छात्रावासीय विद्यार्थियों के समायोजन का एक तुलनात्मक अध्ययन अध्ययन. शिक्षा शोध मंथन, 2(1).77–82.

सिंह, वी. (2015). स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन एवं संवेगात्मक बुद्धि के मध्य सहसंबंध का अध्ययन . शिक्षा शोध मंथन, 1(2). 197–206.

सोनी, डी. (2009). कक्षा 9वीं के किशोरों के समायोजन का आक्रामक व्यवहार व समस्या समाधान योग्यता के संदर्भ में अध्ययन. एम0एड0 शोध प्रबन्ध. देवी अहिल्या विश्वविद्यालय : इंदौर.